

# डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 12, इब्रानियों 1 3:1-25: एक ईश्वर-प्रसन्न प्रतिक्रिया

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

जबकि कुछ विद्वानों ने अध्याय 13 को ऐसे निर्देशों की एक श्रृंखला माना है जो उपदेश का अभिन्न अंग नहीं हैं, और शायद बाद के संस्करण का भी, ये उपदेश वास्तव में पिछले उपदेश के तर्क और मण्डली के सामने आने वाली चुनौतियों दोनों से सीधे संबंधित हैं। यहाँ उपदेशक श्रोताओं को कुछ विशिष्ट निर्देश देता है कि उन्हें शत्रुतापूर्ण समाज का सामना कैसे करना है और आने वाले स्थायी शहर के लक्ष्य तक सुरक्षित और बिना थके कैसे पहुँचना है। इब्रानियों 13:1 से 21, उस प्रतिक्रिया की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता दिखाती है और जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है।

इस अंश को कोष्ठक में रखा गया है और 1228 के परिचयात्मक उपदेश में पाए जाने वाले शब्द सु-प्रसन्नतापूर्वक, यूरेस्टोस से संबंधित शब्दों द्वारा विषयगत स्थिरता दी गई है, आइए हम कृतज्ञता दिखाएं जिसके माध्यम से हम एक सु-प्रसन्न तरीके से भगवान की पूजा करते हैं। यही शब्द अध्याय 13, श्लोक 16 में इन उपदेशों के अंत के पास दिखाई देता है: आइए हम अच्छा करना और साझा करना न भूलें, क्योंकि ऐसे बलिदानों से भगवान बहुत प्रसन्न होते हैं, यूरेस्टो। और फिर, अंत में, इस पाठ के धर्मोपदेश वाले हिस्से को बंद करने वाले आशीर्वाद में, हम लेखक को यह प्रार्थना करते हुए पाते हैं कि भगवान, उद्धारण, आप में वह काम करेंगे जो उसके सामने, यीशु मसीह के माध्यम से, अच्छी तरह से प्रसन्न है, यूरेस्टो।

बेशक, यह शब्द समूह इब्रानियों 11:5 से 6 को भी याद दिलाता है, जहाँ परमेश्वर को प्रसन्न करना मृत्यु के पार जाने के लिए आवश्यक है और यह परमेश्वर पर भरोसा करने, परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करते रहने और परमेश्वर के प्रति ईमानदारी से प्रतिक्रिया करने का परिणाम है। इस अध्याय में, लेखक पूरे ईसाई समूह में एकजुटता और समर्थन बनाए रखने के लिए उपदेश देता है, जो व्यक्तिगत विश्वासियों को आशा के अंगीकार में दृढ़ रहने की अनुमति देता है, चाहे वे कितने भी हाशिए पर क्यों न हों। वह श्रोताओं को इस दुनिया में पद और धन की खोज से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, और वह श्रोताओं को यीशु में अपनी दृढ़ता और यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ स्थापित अनुग्रह के रिश्ते को खोजने के लिए उपदेश प्रस्तुत करता है।

ये सभी बातें, एक साथ ली गई, दिखाती हैं कि किस तरह से परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीना है और कैसे प्राप्त लाभों और आने वाले लाभों के लिए परमेश्वर को उचित और उचित प्रतिफल देना है। उपदेश संचार के साधनों के लिए उपयुक्त सामग्री के साथ समाप्त होता है, जिसके लिए लेखक को कम किया जाता है, अर्थात्, उसे अपना उपदेश लिखित संचार के रूप में भेजना होता है। इस प्रकार, इब्रानियों 13, 18 से 25 में, हम ऐसे तत्व पाते हैं जो आम तौर पर एक पत्र को समाप्त करते हैं, खासकर क्योंकि ये तत्व ईसाई प्रवचन में जाने जाते हैं।

इसके साथ ही, लेखक नए नियम में संचार के सबसे गहन अंशों में से एक को समाप्त करता है। इब्रानियों 16, 1 से 6 में, लेखक अपने अभिभाषकों को कुछ प्रमुख व्यवहार और अभिविन्यास की सराहना करता है। इस खंड को ग्रीक लेक्सेम फिल से संबंधित शब्दों के माध्यम से सुसंगतता दी गई है, जो प्रेम और स्नेह से संबंधित लेक्सेम है।

यह शब्द इन छह आयतों में कई बार आता है। फिल, एडेल्फिया, भाईचारे के प्यार के लिए, आयत 1 में। फिल, ऑक्सेनिया, मेहमाननवाज़ी के लिए, आयत 2 में। और अफिल, अर्गोरोस, पैसे के प्यार से दूर रहते हुए, आयत 5 में। और इसलिए, हम पढ़ते हैं, भाईचारे का प्यार जारी रहना चाहिए। मेहमाननवाज़ी के ज़रिए, और कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का सत्कार किया है, इसलिए मेहमानों से प्यार करना न भूलें।

कैद किए गए लोगों को उनके साथ कैद समझो, और उनके साथ दुर्व्यवहार किए गए लोगों को उनकी खाल में तुम ही समझो। विवाह को सभी बातों में सम्मान दिया जाना चाहिए, और विवाह-बिछौना पवित्र रखा जाना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। इन आरंभिक चार छंदों में, लेखक सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से फिल-एडेल्फिया को बनाए रखने के महत्व को दर्शाता है, वह प्रेम जो भाई-बहनों की विशेषता है।

ग्रीको-रोमन काल के नैतिक कार्यों में भाई-बहनों का लोकाचार एक महत्वपूर्ण विषय था। अरस्तू के निकोमैचेन एथिक्स की पुस्तक 8 और प्लूटार्क के फ्रेटरनल अफेक्शन पर ग्रंथ दो उदाहरण प्रदान करते हैं कि ग्रीक नैतिकतावादियों ने कैसे सोचा कि भाइयों और बहनों को एक-दूसरे के प्रति व्यवहार करना चाहिए। वास्तव में, उस बड़े सांस्कृतिक लोकाचार में, हमें भाइयों और बहनों के लिए प्यार के कई तत्व मिलते हैं जिन्हें ईसाई लेखक अपने पाठकों को बताते हैं।

उदाहरण के लिए, सहयोग, एकजुटता और संपत्ति का बंटवारा सभी ऐसे मूल्य हैं जिन्हें रिश्तेदारों के बीच लागू किया जाना चाहिए। बेशक, ईसाई समुदाय में, यह स्वाभाविक रूप से रिश्तेदारों के बीच नहीं है, बल्कि उन लोगों के बीच है जो साझा आदर्शों और प्रतिबद्धताओं से संबंधित हो गए हैं, और विशेष रूप से, यह विश्वास कि वे सभी भगवान द्वारा एक ही परिवार में गोद लिए गए हैं। समूह, फिल-एडेल्फिया द्वारा आपसी प्रेम और समर्थन, एक दूसरे में गहन भक्ति, रिश्तेदारी और निवेश का वह स्तर, समूह के बाहर समर्थन और संबंधों के खोए हुए नेटवर्क की भरपाई करने के साथ-साथ ईसाई के अविश्वासी पड़ोसियों की अस्वीकृति और शत्रुता के क्षरणकारी प्रभावों को भी संतुलित करता है।

दूसरा गुण जिसे लेखक यहाँ बढ़ावा देता है वह है आतिथ्य, मेहमानों और अजनबियों के प्रति प्रेम। ईसाई समुदाय को बनाए रखने के लिए यह एक आवश्यक अभ्यास था, सबसे पहले क्योंकि ईसाई सांप्रदायिक पूजा का अस्तित्व व्यक्तियों पर निर्भर करता था कि वे समूह की बैठकों के लिए अपने घरों को खोलने के लिए तैयार हों, भले ही, कुछ स्थितियों में, यह कलंक हो कि व्यक्ति खुद को और अपने परिवार को ईसाई आंदोलन के समर्थकों के रूप में पहचानता है। प्रारंभिक ईसाई आंदोलन भी यात्रा करने वाले मिशनरियों, यात्रा करने वाले शिक्षकों और चर्चों के दूतों के लिए आतिथ्य पर निर्भर था, इसलिए आतिथ्य वास्तव में भाई-बहन के प्यार, फिल और एडेल्फिया

के साथ-साथ प्रारंभिक ईसाई समूह और चर्चों के नेटवर्क को बनाए रखने के लिए एक मुख्य मूल्य था।

बनाए रखने के लिए लेखक जो तर्क देता है, वह बाइबिल की उन कहानियों का सामान्य संदर्भ है, जिनमें अनजाने में स्वर्गदूतों को आतिथ्य प्रदान किया गया था। हम यहाँ, विशेष रूप से उत्पत्ति 18 और 19 की कहानियों के बारे में सोच सकते हैं, जिसमें अब्राहम और सारा, और फिर लूत, अजनबियों को आतिथ्य दिखाते हैं जो प्रभु के स्वर्गदूत बन जाते हैं। इस श्रृंखला में तीसरा आदेश है कि जेल में बंद लोगों को ऐसे याद रखें जैसे कि वे उनके साथ जेल में हों और जिनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, उन्हें ऐसे याद रखें जैसे कि वे उनकी त्वचा में हों।

याद रखने की शुरुआती आज्ञा दूसरे श्लोक में न भूलने की आज्ञा के साथ कलात्मक संतुलन और दोहराव से बचने का अवसर प्रदान करती है। यह आज्ञा एक बार फिर उन विश्वासियों को भौतिक और भावनात्मक सहायता के रूप में राहत प्रदान करने के महत्व पर जोर देती है जिन्हें समाज ने सबसे अधिक लक्षित किया है। यदि समूह ऐसी परिस्थितियों में इस तरह का समर्थन जुटाने के लिए तैयार था, तो समूह का प्रत्येक सदस्य यह जान लेगा कि समाज चाहे मुझे किसी भी रास्ते पर ले जाए, मेरी बहनें और भाई मुझे असहाय नहीं छोड़ेंगे।

वे मुझे निराश नहीं करेंगे। यह विश्वास कि भाई-बहन इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं कि सार रूप में वे एक ही चीज़ हैं, हालाँकि अलग-अलग व्यक्तियों में, जैसा कि अरस्तू ने अपने नीतिशास्त्र में कहा है, दूसरे के दुखों को अपने दुखों के रूप में देखने और उन्हें पूरे दिल से और उतनी ही बहादुरी से दूर करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जितनी कि कोई अपने स्वयं के दुख को दूर करने की उम्मीद करता है। व्यंग्यकार लुसियन ने गवाही दी है कि यह रवैया दूसरी शताब्दी ईस्वी तक ईसाइयों के बीच पूरी तरह से स्थापित हो चुका था।

उनका व्यंग्य, जिसका शीर्षक है द पासिंग ऑफ पेरेग्रीनस, इस बात की झलक दिखाता है कि किस तरह ईसाइयों ने अपने लोगों की देखभाल और सहायता की। इस कहानी में, पेरेग्रीनस मूल रूप से एक बेकार दार्शनिक और धर्म का सौदागर है, जो कुछ समय के लिए एक ईसाई शिक्षक और दार्शनिक के रूप में पेश आता है, और इसलिए एक चर्च से दूसरे चर्च में जाता है और मूल रूप से कुछ समय के लिए इस ईसाई आंदोलन का समर्थन प्राप्त करता है। जब पेरेग्रीनस खुद को जेल में पाता है, तो ईसाई उसकी देखभाल करने, उसका साथ देने और उसे अपनी ज़रूरत की हर चीज़ पहुँचाने के लिए खुद को समर्पित कर देते हैं।

लुसियन इसे इस तरह से समझाते हैं। इस प्रकार, उनके पहले कानून निर्माता ने, यहाँ यीशु के बारे में सोचते हुए, उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वे सभी एक दूसरे के भाई-बहन हैं। इसलिए, वे सभी चीज़ों, सभी भौतिक वस्तुओं को, अंधाधुंध तरीके से तुच्छ समझते हैं, और उन्हें आम संपत्ति मानते हैं।

मसीह में भाई-बहनों के रूप में, विश्वासियों को हर तरह से एक साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि परिवार का हर सदस्य स्वर्गीय लक्ष्य तक सुरक्षित पहुँच सके। पिछले समय में, उपदेशक के श्रोताओं ने अपने सबसे हाशिए पर पड़े बहनों और भाइयों के साथ पहचान बनाने और उनकी

मदद करने और उनका समर्थन करने में कभी असफल न होने का यही गुण प्रदर्शित किया था, जैसा कि उपदेशक ने अध्याय 10, श्लोक 32 से 34 में याद किया। और इसलिए, इस उपदेश में, वह उन्हें ऐसा अधिक से अधिक करने का आग्रह कर रहा है।

13.4 में, लेखक अपना ध्यान उन प्रेम के प्रकारों पर केंद्रित करता है जिन्हें नहीं दिखाना चाहिए। यहाँ, विवाह में निष्ठा को समूह के बीच एक निरंतर मूल्य के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए, प्रेम के गलत रूपों से परहेज करके, आस्तिक उन लोगों के बीच घनिष्ठ संबंधों को नुकसान पहुँचाने से बचना चाहता है, जिन्हें ईसाई उद्यम में एक-दूसरे का सबसे अधिक निकटता से समर्थन करना चाहिए।

उन्होंने जो तर्क दिया है, वह अब तक श्रोताओं को परिचित हो चुका होगा: व्यभिचारियों और व्यभिचारियों के लिए परमेश्वर का भविष्य का न्याय। एक दूसरे प्रकार का प्रेम जो लोगों को परमेश्वर की ओर उनके आगे बढ़ने से दूर ले जाता है, वह है धन का प्रेम, जो इस सेटिंग में ईसाई प्रतिबद्धता के लिए समान रूप से विनाशकारी और क्षरणकारी होगा क्योंकि धन से वंचित करना समाज की विचलन नियंत्रण तकनीकों में से एक है, जैसा कि लेखक ने अध्याय 10, श्लोक 34 में श्रोताओं को याद दिलाया है। अतीत में, उन्हें अपनी संपत्ति की जब्ती या लूट को खुशी से स्वीकार करने की चुनौती दी गई थी, क्योंकि वे समाज के उन्हें रोकने के प्रयासों से आगे निकल गए थे।

इसलिए, लेखक श्रोताओं को प्रोत्साहित करता है कि वे अपने मार्ग को धन के प्रेम से मुक्त रखें और जो उनके पास है, उसी में संतुष्ट रहें, क्योंकि उसने स्वयं कहा है, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा, न ही त्यागूंगा, ताकि हम यह कहने के लिए साहस कर सकें, प्रभु मेरी सहायता है। मैं नहीं डरूंगा। एक इंसान मेरा क्या कर सकता है? लेखक उन्हें केवल लालच से बचने का आग्रह नहीं कर रहा है, बल्कि उन्हें अपने प्रतिफल को खोने की कीमत पर वापस पाने की कोशिश न करने का आग्रह कर रहा है, जो उन्होंने पिछले समय में मसीह के लिए खो दिया था।

अब धन-संपत्ति से उनका अलगाव उन्हें ऐसे देश में बेहतर और स्थायी संपत्ति दिलाएगा, जहाँ उनका सम्मान ईश्वर की संतानों जैसा होगा। लेखक पूरे उपदेश में इस बात पर भी जोर देता है कि श्रोताओं के पास वास्तव में क्या है। एक प्रमुख अच्छाई जो वे प्राप्त करते हैं, वह है अपनी तीर्थयात्रा के दौरान समय पर मदद के लिए ईश्वर के अनुग्रह तक पहुँच, जैसा कि लेखक ने उन्हें अध्याय 4, श्लोक 16 में बताया था: इसलिए, आइए हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएँ, ताकि हम दया प्राप्त करें और ज़रूरत के समय मदद करने के लिए अनुग्रह पाएँ।

वह उन्हें यहाँ पवित्रशास्त्र के शब्दों का उपयोग करते हुए इस विशेषाधिकार की याद दिलाता है, क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं कहा है, मैं निश्चय ही तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा, न ही त्यागूंगा। लेखक ने यहाँ व्यवस्थाविवरण 31 पद 6 से भाषा ली है, जहाँ लेखक लिखता है, तुम्हारा परमेश्वर निश्चय ही तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा, न ही त्यागेगा, इसे परमेश्वर द्वारा प्रथम-व्यक्ति कथन बनाकर संशोधित करता है। यह श्रोताओं को एक बार फिर से विश्वास का आधार प्रदान करता है, जैसा कि पूरे उपदेश में, परमेश्वर के साथ उनके संबंध में और परमेश्वर की हमेशा श्रोताओं के साथ खड़े होने और उन्हें वह सब प्रदान करने की इच्छा है जो उन्हें उस यात्रा में दृढ़ रहने के लिए चाहिए जिस पर परमेश्वर ने उन्हें शुरू करने के लिए कहा था।

लेखक ने भजन संहिता 118 की आयत 6 का एक पाठ करके परमेश्वर के वादों के प्रति उचित प्रतिक्रिया को दर्शाया है, एक ऐसी प्रतिक्रिया जिसके बारे में उसे उम्मीद है कि श्रोता इसे आत्मसात करते रहेंगे और खुद को प्रकट करेंगे। इस प्रकार, वह लिखता है, इसलिए हमें यह कहने का साहस मिलता है, प्रभु मेरा सहायक है। मैं नहीं डरूंगा।

एक इंसान मेरे साथ क्या कर सकता है? श्रोता, यदि वे भजनकार द्वारा बताए गए तरीके को अपनाते हैं, तो वे मानवीय विरोध के सामने डर को नकारना जारी रखेंगे, क्योंकि उन्हें अपनी यात्रा में ईश्वरीय सहायता की महानता का आनंद मिलता है। यह विश्वास व्यक्त करता है कि वे अपनी वर्तमान प्रतियोगिता जीत सकते हैं क्योंकि ईश्वर उनका सहयोगी है। इस प्रकार लेखक श्रोताओं को ईश्वर और ईश्वर के पुत्र के प्रति कृतज्ञता और निष्ठा में दृढ़ रहने और आज्ञाकारी शिष्यत्व में उन्हें आगे बढ़ाते रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है क्योंकि, वास्तव में, उन्हें उन लोगों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है जो उस यात्रा में उनका विरोध करेंगे।

उपदेश का अगला खंड, विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला से गुज़रते हुए, श्रोताओं को उस केंद्र को खोजने के लिए प्रेरित करने के लेखक के लक्ष्य को पूरा करना जारी रखता है जो उन्हें उनकी ईसाई आशा में स्थिरता और दृढ़ता देता है, और इस प्रकार एक दूसरे के साथ और यीशु के प्रति उनके संबंधों और दायित्वों में भी विश्वसनीयता देता है। और इसलिए, इब्रानियों 13, 7 से 8 में, हम पढ़ते हैं, अपने अगुवों को याद करो जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया। उनके आचरण के अंतिम परिणाम को देखते हुए, उनके विश्वास का अनुकरण करो।

यीशु मसीह कल और आज हैं, वही और हमेशा के लिए हैं। उन लोगों का जिक्र करते हुए जिन्होंने आपको परमेश्वर का वचन सुनाया, लेखक शायद पहले के सुसमाचार प्रचार करने वाले दल की ओर इशारा कर रहा है, जिसके उद्घोषणा के इर्द-गिर्द ईसाई समुदाय का गठन हुआ था। जब उपदेशक श्रोताओं से उनके आचरण के परिणाम या अंतिम परिणाम पर विचार करने का आग्रह करता है, तो यहाँ एकबासिस शब्द मृत्यु के लिए अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला व्यंजनापूर्ण शब्द है, वह यह संकेत देता है कि ये सुसमाचार प्रचारक तब से गवाहों के महान बादल में शामिल हो गए हैं, और अपने पीछे विश्वास में अंत तक जीने के और उदाहरण छोड़ गए हैं, जो श्रोताओं के अनुकरण के योग्य हैं।

नेताओं की दृढ़ता और उनका विश्वास उनके भरोसे की वस्तु, यीशु की अटूट विश्वसनीयता के कारण संभव हुआ, जो कल, आज और हमेशा एक ही है। इब्रानियों 13:8 में यह प्रसिद्ध कथन ईश्वरीय अपरिवर्तनीयता की एक अलग पुष्टि नहीं है, बल्कि यीशु की निरंतर विश्वसनीयता की पुष्टि है। डियो क्रिसोस्टोम, एक यूनानी दार्शनिक और राजनेता जो लगभग 50 ईस्वी से लगभग 120 ईस्वी तक जीवित रहे, अविश्वास पर अपने भाषण के संदर्भ में एक सहायक तुलनात्मक पाठ प्रदान करते हैं।

वह शिकायत करते हैं कि, उद्धरण, मनुष्यों के साथ, कोई स्थिरता या सच्चाई नहीं है। किसी ने भाग्य के बारे में जो कहा है, वह मनुष्यों के बारे में अधिक कहा जा सकता है, अर्थात्, कोई भी

किसी के बारे में नहीं जानता कि वह कल तक जैसा है वैसा ही रहेगा या नहीं। किसी भी दर पर, लोग एक दूसरे के साथ किए गए समझौतों का उल्लंघन करते हैं।

मनुष्यों के साथ इस अस्थिरता के कारण, डियो सोचता है कि मनुष्यों पर भरोसा न करना अधिक विवेकपूर्ण है, जब तक कि कोई इससे बच न सके। हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने पुष्टि की है कि एक ऐसा व्यक्ति है जिसका चरित्र और शब्द युगों से नहीं बदलता है, बल्कि वह स्थिर रहता है। इस स्थिरता के कारण, श्रोता आज और कल यीशु पर भरोसा कर सकते हैं, जैसे कि कल, उनके नेताओं ने यीशु पर भरोसा किया और निराश नहीं हुए।

यीशु का अनुग्रह, जो आज नहीं है और कल नहीं रहेगा, बल्कि हमेशा अपने वफादार लोगों के प्रति मौजूद रहता है, इस प्रकार संबोधित करने वालों के दिलों के लिए स्थिरता का स्रोत बन जाता है। यह उपदेश के एक प्रमुख जोर का एक प्रभावी सारांश है, अर्थात्, तथ्य यह है कि जिसने वादा किया है वह वफादार या विश्वसनीय है। निम्नलिखित छंदों में हम पढ़ते हैं, विविध और विदेशी शिक्षाओं से बहकें नहीं, क्योंकि यह एक अच्छी बात है कि हृदय अनुग्रह से दृढ़ होता है, न कि भोजन से।

जो लोग ऐसी प्रथाओं का पालन करते थे, उन्हें उनसे कोई लाभ नहीं हुआ, लेकिन हमारे पास एक वेदी है, जिस पर तम्बू में पूजा करने वालों को खाने का कोई अधिकार नहीं है। यीशु, जो भरोसे का आधार है, अविश्वसनीय चीजों के विपरीत खड़ा है, जिनसे लोग अपने लिए कुछ स्थिर लंगर सुरक्षित करने की कोशिश कर सकते हैं। हमें इस खंड के तर्कपूर्ण ढांचे को देखने के लिए एक पल के लिए रुकना चाहिए।

लेखक 13:9 में एक सलाह देता है, जिसे विभिन्न और विदेशी शिक्षाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए। फिर वह एक व्याख्यात्मक तर्क जोड़ता है, क्योंकि यह अच्छी बात है कि हृदय अनुग्रह से स्थापित होते हैं, न कि ऐसे भोजन से जो उन लोगों को लाभ नहीं पहुँचाते जो उनके द्वारा जीते हैं। इसके साथ, वह एक दूसरा तर्क जोड़ता है, क्योंकि हमारे पास एक वेदी है जिस पर से सांसारिक तम्बू में सेवा करने वालों को खाने का कोई अधिकार नहीं है।

इसलिए, 13:9 का अलंकारिक उद्देश्य, विश्वास के लिए सुरक्षित नींव के लिए एक आधार प्रदान करना है, अर्थात् यीशु, जिसे 13.7 में समुदाय के संस्थापकों ने बंदरगाह पर अपनी स्वयं की आशा के आगमन के लिए एक पर्याप्त और पर्याप्त लंगर पाया। कोई भी शिक्षा जो पुरानी या नई है या यीशु के ईश्वर के अनुग्रह की प्रभावी मध्यस्थता और अनुग्रह में बने रहने के तरीके के बारे में शिक्षा के अलावा अन्य है, श्रोता की मसीह में अपनी स्थिरता को खतरे में डालती है। ऐसी शिक्षा उन्हें दूर ले जाने की धमकी देती है, जो दृढ़ता के एक निश्चित स्थान पर बने रहने के ठीक विपरीत है।

हमारे लिए, जो मण्डली की तात्कालिक सेटिंग से बहुत दूर हैं, यह समझना बिलकुल अलग है कि उपदेशक किस बारे में बात कर रहा है, अगर वह मण्डली के इर्द-गिर्द घूम रही विशेष शिक्षाओं को लक्षित कर रहा था। यह स्पष्ट है कि मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ अनुग्रह संबंध की

पारस्परिकता में अपने जीवन के लिए स्थिरता की खोज करना एक महान या सम्मानजनक मार्ग है। कोई अन्य मार्ग कोई लाभ नहीं देता।

विविध और विचित्र शिक्षाओं को भोजन के स्तर पर गिरा दिया जाता है। यह उपदेशक के पुराने नियम के चरित्र, सीमित प्रभावकारिता और दायरे के बाहरी नियमों और नए नियम, परमेश्वर के अनुग्रह, जो यीशु द्वारा हमारे लिए प्राप्त किया गया है, के बीच के बुनियादी अंतर को दोहराता है। 13:10 में, हम तर्क का संक्षिप्त पुनर्कथन और पूरे उपदेश का उपदेश पाते हैं।

श्रोताओं को फिर से यीशु की पुरोहित मध्यस्थता से प्राप्त अतुलनीय लाभों की याद दिलाई जाती है, जिसे यहाँ एक पंथिक भोजन तक पहुँच के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक पशु बलि का कौन सा हिस्सा कौन खाएगा, यह टोरा में सावधानीपूर्वक निर्धारित किया गया था, और पुजारियों और देवता के विशेषाधिकारों की ईर्ष्यापूर्वक रक्षा की गई थी। हालाँकि, ईसाइयों के पास एक ऐसी मेज पर एक विशेषाधिकार प्राप्त स्थान है, जहाँ वे सम्मानित पुजारी भी नहीं आ सकते हैं, कम से कम यीशु पर उनकी अपनी निर्भरता के अलावा तो नहीं।

जबकि अन्य लोगों ने छाया का आनंद लिया, अभिभाषकों ने वास्तविक चीज़ का आनंद लिया और किसी भी कम अच्छे के लिए इस विशेषाधिकार को नहीं छोड़ना चाहिए। वेदी जानबूझकर अस्पष्ट है ताकि मसीह के पुरोहित बलिदान और ईसाई समुदाय के लिए इसके लाभों की पूरी चर्चा को याद किया जा सके। कुछ व्याख्याकारों ने संभावना जताई है कि लेखक भोज की मेज, या प्रभु के भोज, या यूचरिस्ट के बारे में बात कर रहा है।

इस अनुष्ठान भोज में भाग लेने से मसीहियों की भागीदारी का पता चलता है, क्योंकि मसीह के शरीर को उनके लिए तोड़ा गया और उनके लिए रक्त बहाया गया। और इसलिए यह इब्रानियों को दिए गए उपदेश के केंद्रीय विषयों के साथ काफी निकटता से प्रतिध्वनित होता है। हालाँकि लेखक ने यूचरिस्ट का ऐसा कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं दिया है, लेकिन प्रारंभिक चर्च में और विशेष रूप से पॉलिन मंडलियों में इस अनुष्ठान की व्यापक प्रकृति, जहाँ से हम स्वाभाविक रूप से इब्रानियों के लेखक और उनके संबोधनकर्ताओं को मानते हैं, और यीशु की मृत्यु से श्रोताओं को प्राप्त होने वाले लाभों में समग्र रूप से उपदेश की रुचि, इसे एक आकर्षक प्रतिध्वनि बनाती है।

लेखक 13:9-10 में उल्लेख करते हैं कि बलि के जानवर और पवित्र भोजन और अनुष्ठान, या अनुष्ठानों की कमी, उसे यीशु की मृत्यु के बारे में सोचने के लिए एक रूपरेखा के रूप में प्रायश्चित के दिन के अनुष्ठानों में वापस ले जाती है। इसलिए हम श्लोक 11-14 में पढ़ते हैं कि इन जानवरों के शरीर, जिनका खून पापबलि के लिए महायाजक के माध्यम से पवित्र स्थानों में ले जाया जाता है, शिविर के बाहर जलाए जाते हैं। इसलिए, यीशु ने अपने खून के माध्यम से लोगों को पवित्र करने के लिए, गेट के बाहर भी पीड़ा सहन की।

अब, आओ हम उसकी निन्दा को अपने ऊपर लेकर छावनी के बाहर उसके पास जाएँ, क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थायी नगर नहीं है, परन्तु हम आनेवाले नगर की खोज में हैं। प्रायश्चित के दिन बलिदान के शवों को, वास्तव में, तम्बू के याजकों द्वारा खाया नहीं जाता था, बल्कि पूरी तरह से जला दिया जाता था। जब महायाजक द्वारा रक्त को पवित्र स्थानों में ले जाया जाता था, तो वे

पापबलि के लिए बैल और पापबलि के लिए बकरे को ले जाते थे, जिनका रक्त प्रायश्चित करने के लिए पवित्र स्थानों में ले जाया जाता था, और उन्हें छावनी के बाहर ले जाकर आग में जला देते थे, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 16:27 में निर्धारित है।

इब्रानियों के लेखक ने मूलरूप को, अर्थात् प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन और उसके सभी विवरणों को, प्रतिरूप में होने वाली घटनाओं के लिए एक आदेश के रूप में पढ़ा है, अर्थात् यीशु के जीवन की घटनाएँ, यरूशलेम की दीवारों के द्वार के बाहर उनके क्रूस पर चढ़ने के विवरण तक। लैव्यव्यवस्था में प्रायश्चित बलिदान के शवों के निपटान के लिए नुस्खा शिविर के बाहर या द्वार के बाहर यीशु की मृत्यु की व्याख्या को लोगों को पवित्र करने के लिए किए गए बलिदान के रूप में पुष्ट करता है, यहाँ पद 12 में धर्मोपदेश के केंद्रीय तर्क को याद दिलाता है। यीशु के निस्वार्थ परोपकार के कार्य की याद सीधे पद 13 में समान रूप से कृतज्ञता व्यक्त करने के आह्वान की ओर ले जाती है।

इसलिए, आइए हम शिविर के बाहर उसके पास जाएं। श्रोताओं को यीशु के उपहारों के वफ़ादार, श्रद्धावान, आभारी लाभार्थी होने की कीमत से पीछे नहीं हटना चाहिए। यीशु के प्रति उनके ऋण को उन्हें शिविर छोड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए जैसा कि उसने उनके लिए किया था और उसके लिए अपमान सहना चाहिए जैसा कि उसने उनके लिए अपमान सहा था।

यह आह्वान आंदोलन के बड़े रूपकों के अनुकूल है जिसका उपयोग लेखक ने पूरे उपदेश में श्रोताओं को दुनिया में स्थापित करने के लिए किया है। शिविर से बाहर जाना इस दुनिया की संरचनाओं में अपने घर को पीछे छोड़ने के समान है, जैसा कि अब्राहम और मूसा ने उदाहरण दिया। इस तरह से बाहर जाना ईश्वर के निकट आने और अंततः उस शाश्वत क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए एक शर्त है जहाँ यीशु उनके अग्रदूत के रूप में गए हैं।

यहूदी धर्मग्रंथों की विरासत में शिविर के बाहर का स्थान अस्पष्ट है। एक ओर, यह अशुद्धता का स्थान है जहाँ कोढ़ियों का निवास है, जहाँ अपवित्र लोग अपने शुद्धिकरण की प्रतीक्षा करते हैं, और जहाँ कानून तोड़ने वालों को मृत्युदंड दिया जाता है। दूसरी ओर, शिविर के बाहर स्वच्छ स्थान हैं जहाँ बलि के शवों को जलाया जाता है और सबसे आश्चर्यजनक रूप से, जहाँ ईश्वर की उपस्थिति पाई जाती है।

हम इसका अंतिम उदाहरण निर्गमन 33, श्लोक 1 से 7 में पाते हैं, जहाँ, उद्धरण, मूसा ने तम्बू लेकर उसे छावनी के बाहर, छावनी से दूर खड़ा किया। और ऐसा हुआ कि जो कोई प्रभु को खोज रहा था, वह छावनी से निकलकर तम्बू में चला गया। छावनी के बाहर हाशिये पर स्थित वे स्थान जहाँ इब्रानियों द्वारा संबोधित मसीह अनुयायी खुद को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से पाते हैं, वे पवित्र शक्ति के स्थान भी हैं जहाँ परमेश्वर से मुलाकात की जा सकती है।

यहाँ पद 13 में मसीह की निंदा सहना मूसा की अध्याय 11, पद 25 में भी ऐसा ही करने की इच्छा को याद दिलाता है, ताकि उसे अधिक से अधिक पुरस्कार मिले। मसीह की निंदा सहना एक बुद्धिमानी भरा और महान चुनाव है, जैसा कि मूसा ने बहुत पहले प्रदर्शित किया था। उस निंदा का अर्थ है, अंत में, मिस्र के खज़ानों से भी अधिक धन, क्योंकि यह उस व्यक्ति की निशानी है जो

परमेश्वर के लोगों में शामिल हो गया है और इस प्रकार परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों की अनन्त विरासत में आ गया है।

यीशु की खातिर, अब नुकसान और अपमान के अनुभव की ओर ले जाने वाले मार्ग पर दृढ़ता से बने रहना, अंततः लाभदायक मार्ग है, जैसा कि लेखक ने श्रोताओं को याद दिलाया है, एक स्थायी शहर, यहाँ एक मेनुसन शहर की कमी के साथ, आने वाले शहर, मेलुसन शहर की उम्मीद के साथ, जो हमेशा के लिए कायम रहेगा। इस दुनिया में किसी की स्थिति में निवेश, खासकर अगर इसका मतलब भगवान के राज्य, स्थायी या स्थायी राज्य में एक स्थान का नुकसान है, तो यह वही है जो मूर्ख एसाव ने किया होगा। इब्रानियों 13:15 से 16, प्राप्त किए गए उपकारों के लिए उचित प्रतिफल देने के विषय को आगे बढ़ाता है, विशेष रूप से संरक्षक को सम्मान दिलाने और ऐसी सेवाएँ देने के उद्देश्य से जो उसे प्रसन्न करेंगी।

लेखक ने इसे पंथीय भाषा में व्यक्त किया है, जो कि ठीक पहले की आयतों, 12:28 में कृतज्ञता के लिए दिए गए उपदेश के पंथीय अर्थों और यीशु द्वारा श्रोताओं के समर्पण के बारे में उपदेश के केंद्रीय तर्क को ध्यान में रखते हुए है, जिसने उन्हें इन स्वीकार्य बलिदानों को चढ़ाने के योग्य बनाया है। यीशु मसीह के माध्यम से, आइए हम लगातार परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाएँ, यानी, उसके नाम को स्वीकार करने वाले होठों का फल। भलाई करना और बांटना न भूलें, क्योंकि इस तरह के बलिदानों से परमेश्वर बहुत प्रसन्न होता है।

यहाँ पहला श्लोक भजन 50, श्लोक 14 को पुनः संदर्भित करता है, जहाँ भजनकार अपने श्रोताओं को परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाने का आदेश देता है, जो यहूदी धर्म में बलिदान के तर्कसंगतकरण की एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा पर आधारित है, जिसके अनुसार स्तुति, गवाही और न्याय के कार्यों से जुड़े बलिदान खूनी पशु बलि की जगह लेते हैं। भजन 50, श्लोक 12 और 13, वास्तव में, पशु बलि में परमेश्वर को भोजन और पेय देने के बारे में सोचने की तर्कहीनता की आलोचना करते हैं, इसके बजाय स्तुति के बलिदान को उचित विकल्प के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यहाँ परमेश्वर के नाम की स्वीकारोक्ति का अर्थ संरक्षक की सम्मानजनक प्रतिष्ठा का विस्तार करना है।

सेप्टुआजेंट अनुवादकों द्वारा भजन संहिता में हिब्रू का अनुवाद करने के लिए ग्रीक शब्द का बार-बार चयन किया गया था, धन्यवाद देना, धन्यवाद के सार्वजनिक चरित्र पर जोर देना, भगवान की उदारता के लिए सार्वजनिक गवाही। यह हमारे उपदेशक द्वारा संबोधित सेटिंग में एक मार्मिक चुनौती है, जो उनके उपकारकर्ता के रूप में भगवान के लिए गवाही के सार्वजनिक आयाम को रेखांकित करता है। शब्द और कर्म से, संबोधित करने वालों को अपने पड़ोसियों के सामने यह स्वीकार करने के लिए कहा जाता है कि भगवान के उपहार अच्छे हैं और इस तरह के कारक के प्रति वफादार रहने की कीमत के लायक हैं, इस प्रकार साहस बनाए रखें, वास्तव में साहसी गवाही, जिसने उनके अविश्वासी पड़ोसियों के साथ उनके पिछले टकरावों को चिह्नित किया।

श्रोताओं को एक दूसरे की ओर से परमेश्वर को अपनी सेवाएँ अर्पित करने, अपने संसाधनों को एकत्रित करने और एक दूसरे की सहायता करने के अवसरों की तलाश करने के लिए भी बुलाया जाता है, जब किसी को भी आवश्यकता हो। भलाई करना और साझा करना न भूलें, क्योंकि ऐसे

बलिदानों से परमेश्वर बहुत प्रसन्न होता है, जैसा कि लेखक ने पद 16 में आदेश दिया है। यहाँ लेखक का विचार अभी भी यहूदी चिंतन में बहुत गहराई से निहित है कि परमेश्वर किस प्रकार के बलिदान चाहता है।

वह फिर से पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की बात दोहराता है। उदाहरण के लिए, आमोस जानवरों के अनुष्ठानिक वध के बजाय न्यायपूर्ण व्यवहार और धार्मिक कार्यों की बाढ़ लाने का आह्वान करता है। यशायाह गरीबों और बेघरों की देखभाल को ईश्वर को प्रसन्न करने वाला उपास मानता है, लोगों को गरीबों, अनाथों और विधवाओं के हितों की देखभाल करने के लिए कहता है ताकि अनुष्ठानिक बलिदान फिर से स्वीकार्य हो सकें।

जबकि श्रोता परमेश्वर को, जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, ऋण नहीं चुका सकते, वे एक दूसरे के प्रति दयालुता दिखाकर परमेश्वर की उदारता का अप्रत्यक्ष रूप से ऋण चुका सकते हैं, यह बात मत्ती अध्याय 25, पद 31 से 46 में सबसे नाटकीय ढंग से कही गई है। इब्रानियों के लेखक ने परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता दिखाने और अपनी बहनों और भाइयों की सहायता करने के बीच इस संबंध को पुष्ट किया है। संबोधित करने वाले ये मनभावन बलिदान तब भी चढ़ाते हैं जब वे संतों की सेवा करने में परिश्रम दिखाते हैं जैसा कि वे करते रहे हैं, जैसा कि लेखक ने अध्याय 6, पद 10 में कहा है।

श्रोताओं को यहाँ बुलाया गया है कि वे नेक काम करने में लापरवाही न बरतें और एक-दूसरे में निवेश करें जिसे भगवान भी नहीं भूलेंगे। जैसा कि लेखक ने अध्याय 6 की श्लोक 9 में कहा है, भगवान आपके प्रेम और सेवा के कामों को भूलकर अन्यायी नहीं है। ये बल्कि अनंत उपकार प्राप्त करने के लिए अनुग्रह के चक्र को सुरक्षित रखेंगे।

इब्रानियों 13, आयत 18 से 25, अन्य आरंभिक ईसाई पत्र समापनों के पैटर्न के बहुत करीब हैं, खास तौर पर 1 पतरस 5 और रोमियों 15 में पाए जाने वाले। अनुरोध, आशीर्वाद, स्तुतिगान, समाचार, यात्रा की घोषणा, अभिवादन और अंतिम विदाई का यह पैटर्न ग्रीको-रोमन पत्रों के विशिष्ट समापन का एक अनुकूलन है। अनुकूलन विशेष रूप से आशीर्वाद और स्तुतिगान के जोड़ में स्पष्ट है, जो विशेष रूप से उस धार्मिक सेटिंग के लिए उपयुक्त है जिसमें इन आरंभिक ईसाई पत्रों और संचारों को पढ़ा जाता था।

इब्रानियों 13:17 को अपने नेताओं के अधीन रहने या उनकी आज्ञा मानने के पिछले उपदेश के भाग के रूप में सुना जा सकता है, जो 13:7 में अपने नेताओं को याद रखने के साथ एक समावेश बनाता है। सुसमाचार को शुरू में लाने वाले भूतपूर्व नेताओं को याद रखने के आदेश को विश्वास में अपने वर्तमान नेताओं और शिक्षकों की आज्ञा मानने के उपदेश द्वारा संतुलित किया जाता है। लेकिन वही उपदेश विषयगत रूप से समापन सामग्री से भी संबंधित है, जो नेतृत्व के उन व्यक्तियों पर काफी ध्यान देता है जिनसे संबोधित करने वालों को मार्गदर्शन, सम्मान या निंदा के लिए उम्मीद करनी चाहिए, चाहे वे स्थानीय नेता हों जैसे कि पद 14 और 24 में, पद 18, 19 और 22 में लेखक और उनकी टीम, पद 20 और 21 के आशीर्वाद में परमेश्वर, और यहां तक कि तीमुथियुस, जिसकी संभावित यात्रा का उल्लेख पद 23 में किया गया है। और इसलिए, हम यहां पद 17 में पढ़ते हैं, अपने अगुवों के अधीन रहो या उनकी आज्ञा मानो, उनके अधीन रहो, क्योंकि

वे तुम्हारे प्राणों के लिये उन लोगों की नाई चौकसी करते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें न कि विलाप करते हुए, क्योंकि यह तुम्हारे लिये लाभहीन है।

लेखक यहाँ ईसाई नेतृत्व के लोकाचार के बारे में कुछ साझा करता है। नेता अपने प्रभार में अथक परिश्रम करते हैं। प्रयुक्त क्रिया का अर्थ है अपने प्रभार के लाभ के लिए नींद खोना।

वे इस निरीक्षण का प्रयोग हमेशा इस बात को ध्यान में रखते हुए करते हैं कि परमेश्वर उन पर निगरानी रखता है क्योंकि वे लोग भेड़ों के महान चरवाहे को अपना और अपने प्रभार का लेखा-जोखा देंगे। लेखक जोर देकर कहते हैं कि अगर उनके नेता की सेवकाई नेताओं के लिए दुख का कारण बनती है तो यह समुदाय के लिए अनुचित होगा। सहयोग हर तरह से ईसाई समुदाय की पहचान होनी चाहिए, जिसमें पूरे समुदाय की भलाई के लिए नेतृत्व के साथ सहयोग भी शामिल है।

संघर्ष पर खर्च की गई ऊर्जा, शिक्षा के लिए और बाहर से आने वाली अन्य विनाशकारी शक्तियों के प्रतिरोध के लिए उपलब्ध नहीं है। लेखक फिर एक प्रार्थना अनुरोध शुरू करता है। हमारे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि हम आश्वस्त हैं कि हमारे पास सभी चीजों में एक अच्छा विवेक है, और हम खुद को नेक तरीके से संचालित करना चाहते हैं।

मैं आपको ऐसा करने के लिए और भी प्रोत्साहित करता हूँ ताकि मैं जल्दी से जल्दी आपके पास वापस आ सकूँ। यह प्रार्थना अनुरोध उस तरह की मदद का एक उदाहरण है जिसकी कृपा के सिंहासन से उम्मीद की जा सकती है, जैसा कि लेखक ने 4:14-16 में कहा है। और श्रोताओं से आग्रह किया जाता है कि वे स्वयं वक्ता के लिए समय पर मदद माँगें। वक्ता पुष्टि करता है कि वह और उसकी टीम, मंत्रालय में उसके साथी, परमेश्वर के सामने अच्छे विवेक के अधिकारी हैं जो वक्ता और परमेश्वर के बीच बाधाओं की अनुपस्थिति को दर्शाता है जो उनकी प्रार्थना को स्वीकार करेगा, साथ ही वक्ता और श्रोताओं के बीच, जिनकी मध्यस्थता का वह अनुरोध करता है।

यह प्रार्थना निवेदन उस महान लाभ को प्रतिध्वनित करता है जिसे मसीह ने सभी विश्वासियों के लिए निश्चित रूप से लाया है, अर्थात्, उनके विवेक को पापों की अशुद्धता से शुद्ध करना। यह प्रार्थना निवेदन प्रचारक और मण्डली के बीच पूर्व परिचितता का भी स्पष्ट संकेत है, क्योंकि वह लिखता है, यह प्रार्थना करें ताकि मैं शीघ्र ही आपके पास वापस आ जाऊँ। उनके पास किसी प्रकार का पूर्व संबंध है, प्रचारक अतीत में कम से कम किसी समय मण्डली के साथ मौजूद रहा है।

लेखक आगे अपनी मंडली पर एक आशीर्वाद व्यक्त करता है, जिसे निम्नलिखित छंदों के साथ दूर से दिया गया है। और शांति का परमेश्वर, जिसने सनातन वाचा के लहू से भेड़ों के महान चरवाहे, हमारे प्रभु यीशु को मरे हुएों में से जिलाया, तुम्हें हर अच्छी बात में सिद्ध करे ताकि तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और यीशु मसीह के द्वारा जो कुछ उसे अच्छा लगता है, उसे तुम्हारे अन्दर गढ़े, जिसका आदर सदा होता रहे। आमीन।

यह अंतिम आशीर्वाद पहले की व्याख्या और उपदेशों से कई महत्वपूर्ण विषयों को एक साथ जोड़ता है। सबसे पहले, यह फिर से परमेश्वर को यीशु के मृतकों में से जी उठने के सक्रिय कारण

के रूप में प्रस्तुत करता है, इस प्रकार फिर से वह व्यक्ति जिसके पास मृत्यु से जीवन लाने की शक्ति है, एक ऐसा जोर जिसे हमने इब्रानियों 11 में देखा। यह यीशु के बलिदान द्वारा स्थापित वाचा को परमेश्वर द्वारा स्वीकार करने के संकेत के रूप में यीशु को जी उठाने की भी बात करता है, जो इब्रानियों 7 से 10 का एक मुख्य विषय है।

लेखक ने यशायाह 63 पद 11 से भाषा उधार ली है, जहाँ परमेश्वर मूसा को भेड़ों के चरवाहे के रूप में धरती से उठाता है। लेखक यहाँ एक अंतर्निहित तुलना कर रहा है, यीशु को अब भेड़ों का महान चरवाहा बता रहा है, महान शब्द इब्रानियों में यीशु के लिए कहीं और लागू किया गया है, जैसे कि 10.21 में महान महायाजक। यह मूसा जैसे परमेश्वर के अनुग्रह के पहले के मध्यस्थों की तुलना में यीशु की श्रेष्ठता का एक अंतर्निहित अनुस्मारक है, जहाँ पहले इब्रानियों 3:1 से 6 में स्पष्ट तुलना की गई थी। एक चरवाहे के रूप में यीशु का वर्णन ईसाई संस्कृति में व्यापक है। कोई व्यक्ति यूहन्ना के सुसमाचार, अध्याय 10:11 से 14, या 1 पतरस 2:25 को याद कर सकता है।

यह यहूदी प्रवचन से भी मेल खाता है जिसमें यहजेकेल 34 में परमेश्वर को इस्राएल के लोगों का चरवाहा या भजन 23 में व्यक्तिगत धर्मी व्यक्ति का चरवाहा बताया गया है। लेखक परमेश्वर से आह्वान करता है कि वह संबोधित लोगों को हर अच्छी चीज़ प्रदान करे ताकि वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए पूर्ण हो सकें, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना अपना मुख्य एजेंडा बनाया था। यहाँ कोई भी व्यक्ति इब्रानियों 10 :4 से 10 में भजन 40 पद 8 के लेखक के अनुप्रयोग को याद कर सकता है।

देखो, मैं यहाँ हूँ, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने आया हूँ। तो अब, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना ही संबोधित करने वालों का ध्यान केंद्रित होना चाहिए। फिर से, परमेश्वर को प्रसन्न करना प्राथमिक विचार है जिसे लेखक ने अध्याय 11 और 12 में श्रोताओं के सामने रखा है, न कि मनुष्यों को प्रसन्न करने की कोशिश करना, उदाहरण के लिए, मसीही के अविश्वासी पड़ोसी।

ईश्वर के सभी उपहारों की तरह, ये भी, ईश्वर को प्रसन्न करने की क्षमता और ईश्वर की इच्छा को लगातार पूरा करने की क्षमता, यीशु मसीह के माध्यम से सुरक्षित की जाएगी, जो इस प्रकार ईश्वरीय कृपा के मध्यस्थ या मध्यस्थ की अपनी भूमिका में दृढ़ता से बने रहते हैं। यह तुरंत स्पष्ट नहीं है कि उपदेशक इस आशीर्वाद के अंत में लिखते समय किसकी ओर इशारा कर रहे हैं, जिनकी महिमा हमेशा के लिए हो। क्या यह ईश्वर है, या यीशु? इस सापेक्ष सर्वनाम के साथ यीशु के नाम की निकटता उसे अधिक स्वाभाविक संदर्भ बनाती है।

लेकिन दूसरी ओर, उपदेशक अपने उपदेशों में ईश्वर-केंद्रित रहा है। 12:28 में श्रद्धापूर्ण आराधना के माध्यम से ईश्वर के प्रति कृतज्ञता दर्शाई जानी चाहिए। 13:15 और 16 में यीशु मसीह के माध्यम से स्तुति, स्वीकारोक्ति और सेवा के बलिदान ईश्वर के प्रति ही चढ़ाए जाते हैं।

इससे यह संकेत मिलता है कि परमेश्वर फिर से उन उपहारों के लिए सम्मान का पात्र है जो वह यीशु मसीह के माध्यम से देता है, हमेशा उन लोगों के लिए मध्यस्थ है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं। लेखक अब 22 से 25 वें श्लोक में समाचार और आशीर्वाद के परिचित तत्वों के साथ अपना उपदेश समाप्त करता है। वह लिखता है, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ,

बहनों और भाइयों, मेरे उपदेश के शब्दों को सहन करें, क्योंकि वास्तव में मैंने आपको संक्षेप में लिखा है।

आप जानते हैं कि हमारा भाई तीमुथियुस रिहा हो गया है, अगर वह जल्दी आ जाए तो मैं उसके साथ आपसे मिलूंगा। अपने सभी नेताओं और सभी पवित्र लोगों को नमस्कार। इटली से आए लोगों का आपको नमस्कार।

लेखक द्वारा अपने काम को उपदेश के शब्द के रूप में नामित करने से पता चलता है कि यह धर्मोपदेश या उपदेश की शैली से संबंधित है, क्योंकि वास्तव में, इस शब्द का उपयोग तेजी से किया जाने लगा है। प्रेरितों के काम 13, पद 15 में, हम पाते हैं कि यह वाक्यांश प्रवासी आराधनालय में धर्मोपदेश को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। लेखक पुष्टि करता है कि उसने संदेश को संक्षिप्त रखा है ताकि उनकी सावधानी पर कोई दबाव न पड़े।

यह तथ्य कि इस उपदेश को प्रभावी और भावनात्मक रूप से पढ़ने में लगभग एक घंटा लगेगा, हमें इस टिप्पणी को कपटपूर्ण नहीं समझना चाहिए। डायोक्रिटस या सिसरो के कई भाषणों को देने में तीन गुना समय लगा होगा। पत्र समाचार, यात्रा योजनाओं, शुभकामनाओं और एक सूत्रबद्ध आशीर्वाद के साथ समाप्त होता है।

जहाँ तक खबरों का सवाल है, लेखक ने एक रिपोर्ट दी है कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है, जो शायद कलीसिया के लिए पहले से ही पुरानी खबर हो। आप जानते हैं कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। संभवतः, यह वही तीमुथियुस है जो पौलुस का यात्रा साथी और शिष्य था।

रिहा होने का तात्पर्य हाल ही में कारावास से है, एक ऐसी स्थिति जिससे ईसाई रिंग लीडर अक्सर गुजरते थे। तीमुथियुस की यह कैद नए नियम में अन्यथा अप्रमाणित है जब तक कि यह तीमुथियुस द्वारा पॉल के साथ साझा की गई कैद न हो, जिसका उल्लेख फिलेमोन, पद 1 में किया गया है। लेखक सुझाव देता है कि तीमुथियुस वर्तमान में लेखक के स्थान पर यात्रा कर रहा है ताकि दोनों एक साथ मण्डली का दौरा कर सकें, लेकिन लेखक इस मण्डली का दौरा करने के लिए इतना उत्सुक दिखाई देता है कि वह प्रतीक्षा नहीं कर सकता। इस प्रकार संबोधित करने वाले इस नेता और शिक्षक की वापसी की प्रतीक्षा कर सकते हैं और इस प्रकार समूह की दृढ़ता के लिए उनके संसाधनों को व्यक्तिगत रूप से उनके निपटान में रख सकते हैं।

लेखक श्रोताओं से अपने नेताओं और सभी पवित्र लोगों को नमस्कार करने के लिए कहता है और श्लोक 24 में इटली से आए लोगों का अभिवादन आगे बढ़ाता है। यह संभवतः उपदेशक के अभिवादन को पूरी मंडली तक पहुँचाने के लिए एक सूत्रबद्ध अनुरोध है, जो उस समय पूरा होता है जब उपदेश उन्हें ज़ोर से पढ़कर सुनाया जाता है। जैसा कि हमने परिचयात्मक खंड में पता लगाया, इटली से आए लोगों से लेखक द्वारा दिया गया अभिवादन अभिभाषक के स्थान के पुनर्निर्माण में प्रमुखता से सामने आया है।

इटली, खास तौर पर रोम के चर्च के साथ कुछ संबंध का सुझाव देते हुए, यह तय करना मुश्किल है कि क्या यह अभिवादन रोम में लेखक के साथ मौजूद इटालियंस से आया है, जिसे इटली के

बाहर एक मण्डली को भेजा गया है, जहाँ लेखक बाद में वापस आएगा, या यह अभिवादन इटली के बाहर लेखक के साथ मौजूद इटालियंस से आया है, जो अपने घर वापस अपने अभिवादन भेज रहे हैं। लेकिन जैसा कि हमने पहले पता लगाया, पहली संभावना अधिक वजनदार लगती है। यहाँ विशेष भाषा, होई एपोटेस दोनों इटली के लोग, अर्थात् वे लोग जो इटली से हैं, अलगाव के स्थान के बजाय मूल स्थान को प्राथमिकता देते हैं।

प्रारंभिक पांडुलिपियों में साक्ष्य जहां लेखकों ने शीर्षक के बारे में कुछ बताने का प्रयास किया है जिसमें लेखक और संबोधित करने वालों का स्थान दिया गया है, सर्वसम्मति से इस धर्मोपदेश के मूल स्थान के रूप में इटली का समर्थन करता है। हमें ईसाई आंदोलन की वैश्विक या कम से कम स्थानीय प्रकृति के इन छोटे अनुस्मारकों की शक्ति को कम नहीं आंकना चाहिए। किसी भी एक स्थान पर विश्वास करने वाले यह जानकर खुश हो सकते हैं कि वे एक बहुत बड़े समूह का हिस्सा हैं और इतने छोटे अल्पसंख्यक नहीं हैं जितना कि उनकी स्थानीय परिस्थितियाँ उन्हें सोचने पर मजबूर कर सकती हैं।

लेखक आशीर्वाद की एक सूत्रबद्ध घोषणा के साथ समापन करता है। आप सभी पर कृपा बनी रहे, या आप सभी पर कृपा बनी रहे। यह ईसाई साहित्य में संचार के अंत में दिखाई देता है।

उदाहरण के लिए, रोमियों, 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों और कई अन्य पत्रों में। जबकि यह निश्चित रूप से सूत्रबद्ध है, यह इस धर्मोपदेश का एक विलक्षण रूप से उपयुक्त समापन है जिसमें ईश्वर की कृपा और जिस तरह से यीशु ने विश्वासियों के लिए कृपा प्राप्त की है, ऐसे प्रमुख विषय रहे हैं और जिसमें चर्च में दृढ़ता को ईश्वर की कृपा के दायरे में रहने के तरीके के रूप में बढ़ावा दिया गया है, जबकि पक्षपात को कृपा से बाहर होने के मार्ग के रूप में निंदा की गई है। इस प्रकार, धर्मोपदेश की अंतिम इच्छा आप सभी के साथ कृपा हो, श्रोताओं को लेखक के उपदेशों का सारांश दर्शाती है कि वास्तव में ईश्वर की कृपा को एक तरफ फेंकने के बजाय उसे अनुभव करने के मार्ग पर दृढ़ रहना जारी रखें।

इब्रानियों 13 उपदेश के अलंकारिक प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है, न कि बाद में सोचा गया या जोड़ा गया उपदेश। 13:1-16 के उपदेश, विशेष रूप से, बहुत शक्तिशाली हैं क्योंकि उन्हें अध्याय 12:28 के आदेश के साथ पेश किया गया है। ये वे अभ्यास हैं जो परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता की उचित प्रतिक्रिया का गठन करते हैं और जो हमारे आचरण को परमेश्वर के लिए अच्छा बनाते हैं जिसके साथ हमारा लेखा-जोखा है।

लेखक अपने उपदेश के इस हिस्से में सामाजिक इंजीनियरिंग पर भी निरंतर ध्यान देता है जो प्रत्येक विश्वासी को अपने पड़ोसियों द्वारा उन पर लगाए गए तनावों और दबावों का सामना करने में मदद करने के लिए आवश्यक है। शिविर से बाहर जाने की छवि उनके स्थायी शहर के करीब पहुंचने के मार्ग के रूप में भी काफी बयानबाजी करती है। यह एक और छवि है जिसके द्वारा लेखक श्रोताओं को इस यात्रा में दृढ़ता को आगे बढ़ने का लाभकारी तरीका मानने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

शिविर से बाहर जाना उस पैटर्न को दोहराता है जो उनके अग्रदूत, यीशु ने उनके लिए किया था जब वह शिविर से बाहर गए थे और भगवान की आज्ञाकारिता में फाटकों के बाहर क्रूस पर चढ़ाए गए थे, वास्तव में, महिमा में अपने सत्र में वापस जाने के रास्ते पर। जब श्रोता स्वयं यीशु का अनुसरण करते हुए शिविर से बाहर निकलते हैं और अपने समाज में अपना स्थान छोड़ते हैं, तो वे भी सबसे पहले आश्वस्त हो सकते हैं कि वे उनके लिए उनके निवेश और उनके लिए निंदा सहने की उनकी इच्छा के लिए यीशु को उचित प्रतिफल दे रहे हैं, और दूसरा कि वे अंत में उस स्थान पर पहुँचने जा रहे हैं जहाँ उनके अग्रदूत पहले ही उनकी ओर से पहुँच चुके हैं। इस प्रकार लेखक यीशु को वापस देने को बढ़ावा देना जारी रखता है जैसा कि यीशु ने उन्हें दिया था, यीशु के लिए कुछ छोटा सा हिस्सा सहना जो यीशु ने उनके लिए उचित प्रतिफल देने के एक आवश्यक घटक के रूप में उनके लिए सहा था।

लेखक मसीह के नाम की स्वीकारोक्ति, यीशु और इस्राएल के परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता की सार्वजनिक घोषणा को भी बढ़ावा देता है, जिसके साथ यीशु ने उन्हें जोड़ा है, साथ ही अपने साथी विश्वासियों के लिए सेवा और समर्थन के कार्यों को भी परमेश्वर के लिए उपयुक्त धन्यवाद प्रसाद के रूप में बढ़ावा देता है। फिर से, इस उपदेश की समग्र बयानबाजी रणनीति के लिए पारस्परिकता के मूल सामाजिक मूल्य का महत्व यहाँ उभर कर आता है। इस अध्याय में लेखक के उपदेश समकालीन ईसाइयों से कुछ बहुत ही सीधे तरीकों से बात करना जारी रखते हैं।

फिलाडेल्फिया , भाईचारे और बहन के प्यार के मूल्य को ऊंचा उठाना , चर्च के भीतर संबंधों की विशेषता के रूप में, हमें भाई और बहन को संबोधन के सामान्य शब्दों से अधिक समझने की चुनौती देता है। वह हमें एक-दूसरे में अपने निवेश में अधिक से अधिक वास्तविक होने, अपने साथी ईसाइयों को अपने जीवन में शामिल करने और ज़रूरतमंद बहनों और भाइयों के लिए अपने संसाधनों का उपयोग करने के लिए आग्रह करता है। इस प्रकार चर्च समर्थन का एक विश्वसनीय आश्रय बन सकता है जो कई लोगों को हानिकारक जीवन शैली और स्थितियों को पीछे छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद कर सकता है, यह जानते हुए कि वे उन लोगों की संगति में यह यात्रा करेंगे जो उन्हें बाहर निकालने के लिए पूरी तरह से उनमें निवेश करते हैं।

हालाँकि, व्यक्तियों को इस तरह का समर्थन महसूस करने के लिए, चर्च के भीतर विश्वासियों की एक दूसरे के प्रति रिश्तेदार होने की पूर्व प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, और परिवार होने के नाते दायित्वों और पारस्परिक प्रतिबद्धता को स्वीकार करना होता है। लेखक हमें अपने चर्चों में आतिथ्य को एक वास्तविक और नियमित अभ्यास बनाने का भी आग्रह करता है, दोनों अन्य ईसाइयों के प्रति और उन लोगों के प्रति भी जिन्हें हम ईसाई के रूप में सेवा दे सकते हैं, प्यार और अनुग्रह का एक आश्चर्यजनक स्तर दिखाते हुए। बहनों और भाइयों के लिए यह व्यापक प्रेम विशेष रूप से उन भाइयों और बहनों तक बढ़ाया जाना चाहिए जो सबसे अधिक हाशिए पर हैं।

लेखक हमें याद दिलाता है, जैसा कि वह अपनी मंडलियों से आग्रह करता है, कि जेल में बंद लोगों को इस तरह याद रखें जैसे कि वे उनके साथ कैद हैं और जिनके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है जैसे कि वे अपनी त्वचा में ही हों। यह हमें दमनकारी वातावरण में ईसाइयों के लिए ईश्वर के वैश्विक परिवार के लोकाचार को अपनाने का आग्रह करता है। उनकी बहनों और भाइयों के रूप में हमारे लिए चुनौती यह है कि हम उन्हें अपने परिवार की तरह देखें।

मैं पिछले कई सालों से यह देखकर हैरान हूँ कि कितने सारे ईसाई वास्तव में उन परिस्थितियों के बारे में जानने के लिए अनिच्छुक हैं जिनका सामना दुनिया भर में कई ईसाई करते हैं। मसीह में अपने बहनों और भाइयों के लिए परिवार होने के लिए हमें अपनी आँखें और दिल खोलने की ज़रूरत है कि हमारी सीमाओं से परे क्या हो रहा है और उनकी दुर्दशा को हमारी तत्काल चिंता और रुचि बनाना चाहिए, जैसे कि हम उनके साथ हों। यह हमें इन दमनकारी वातावरण में अपने परिवार के समर्थन और राहत में खुद को निवेश करने के लिए कई स्थानों पर ले जा सकता है, जिसमें प्रार्थना, उनकी दुर्दशा के बारे में चुप्पी तोड़ने की प्रतिबद्धता, उन लोगों के लिए सहायता जुटाने की प्रतिबद्धता शामिल है जो खुद हाशिए पर हैं, या ऐसे मामले में जहाँ ईसाईयों को मार दिया जाता है, उन परिवारों का समर्थन करना जिन्हें वे पीछे छोड़ देते हैं, जो इसलिए उस ईश्वर द्वारा त्यागे जाने का एहसास नहीं करेंगे जिसके लिए उन्होंने इतना कुछ त्याग किया है, और अन्यायपूर्ण दमन को समाप्त करने के लिए पैरवी भी करते हैं।

लेखक हमें उन कार्यवाहियों की पहचान करने और उन्हें अस्वीकार करने की चुनौती भी देता है जो हमारी ईसाई प्रतिबद्धता और ईश्वर के प्रति हमारी एकजुट प्रतिक्रिया को नष्ट करती हैं, जैसा कि ईश्वर चाहता है। इब्रानियों 13 में उन्होंने जिन दो बातों का उल्लेख किया है, वे कई समकालीन चर्चों में चुनौतियाँ बनी हुई हैं, पहली चुनौती वैवाहिक निष्ठा की है, जो विवाह बंधन को दृढ़ता के लिए शक्ति का स्रोत बनाती है, न कि इसे हमारे जीवनसाथी और हमारी मंडलियों के लिए बाधा बनने देती है, क्योंकि वे उस रिश्ते का सम्मान करने और उसे स्वस्थ रखने में विफल रहते हैं। दूसरा, लाभ की इच्छा, पैसे का प्यार, जैसा कि लेखक कहते हैं, प्रतिबद्ध शिष्यत्व के लिए एक गंभीर बाधा बनी हुई है।

अधिक की चाहत ईश्वर के प्रति वफ़ादारी के लिए एक वास्तविक चुनौती है। पर्याप्त को स्वीकार करना संतोष का मार्ग है और हमारी आत्माओं, हमारे चर्चों और हमारी दुनिया के लिए ईश्वर के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए बहुत समय और ऊर्जा मुक्त करता है। पूंजीवादी देशों में रहने के लिए शिक्षित और समाजीकृत किए गए लोगों को अक्सर यह समझने में कठिनाई होती है कि क्या पर्याप्त है और शायद ही कभी इस दुनिया के आराम और सुखों के संदर्भ में कम के साथ जीने के बारे में सोचते हैं ताकि ईश्वर की दृष्टि में हमें और अधिक समृद्ध बनाने के लिए ईश्वर की अधिक से अधिक तलाश करने में सक्षम हो सकें।

और इसलिए, लेखक हमारे सामने खुद को लगातार जांचने की ज़रूरत रखता है। क्या हम अपने धन पर भरोसा कर रहे हैं, या हम ईश्वर पर भरोसा कर रहे हैं? क्या हमारे द्वारा धन का उपयोग हमें ईश्वर पर भरोसा करने के लिए दिखाता है, उदाहरण के लिए, जब हम इसका उपयोग ईश्वर के मूल्यों के अनुसार करते हैं, जैसे कि हमारे बहनों और भाइयों के जीवन और कल्याण में निवेश करना जो बहुत ज़रूरतमंद हैं? या क्या हमारे द्वारा धन का उपयोग हमें अपने पैसे में अपनी बुनियादी सुरक्षा की तलाश करने के लिए दिखाता है, उदाहरण के लिए, जब हम अपने लिए बड़े खलिहान बनाते हैं? लेखक अपने श्रोताओं से यह भी आग्रह करता है कि वे शिविर के बाहर यीशु के पास जाएँ और उसकी निंदा सहें। यहाँ तक कि उन देशों में भी जहाँ ईसाई धर्म को सहन किया जाता है, हमें मसीह की निंदा सहने के लिए बुलाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, जब हम उस अन्याय का विरोध करते हैं जिससे बहुत से लोग लाभ उठाते हैं, जब हम उन पूर्वाग्रहों के खिलाफ खड़े होते हैं जिन्हें बहुत से लोग प्रिय मानते हैं, जब हम परमेश्वर के आह्वान का पालन करना चुनते हैं, जब इसका अर्थ है कि हमारे आस-पास के समाज द्वारा मूल्यवान वस्तुओं का नुकसान होता है, तो लेखक हमें ध्यान से देखने, ध्यान से समझने के लिए कहता है कि हम मसीह के लिए कहाँ नहीं जाते हैं, क्योंकि हमें उसके लिए अपमान सहना पड़ सकता है, किसी ऐसी चीज़ को छोड़ने के डर से जो हमें प्रिय है, या इस डर से कि हम जो दुनिया में पले-बढ़े हैं, वह हमें मूल्यवान नहीं मिल सकता है। जब परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा और परमेश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञाकारिता हमें इस अपमान को सहने के लिए मजबूर करती है, तो इब्रानियों के लेखक हमें इसे स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि परमेश्वर जिस तरह से हमें ले जा रहा है वह हमें स्थायी शहर, हमारे सच्चे घर और लक्ष्य के करीब लाता है, और सांसारिक शिविर में हमारी उलझनों से दूर करता है। अपने उपदेश के अंत में, लेखक विशेष रूप से परमेश्वर को प्रसन्न करने के मूल्य को बढ़ाता है, जो कि हमारी महत्वाकांक्षाओं और हमारे स्वयं के एजेंडे में सबसे आगे होना चाहिए।

और विशेष रूप से, वह हमसे उन कार्यों को करने का आग्रह करता है जो, हमारे लिए यीशु की मृत्यु द्वारा पवित्र किए गए लोगों के रूप में, परमेश्वर के प्रति हमारा पुरोहित कर्तव्य बन जाते हैं। वह हमसे, अपने श्रोताओं के साथ, परमेश्वर को उन बलिदानों को चढ़ाते रहने का आग्रह करता है जो उसे प्रसन्न करते हैं, स्तुति का बलिदान, होठों का फल जो परमेश्वर के नाम को स्वीकार करते हैं, और साथ ही भलाई करने और साझा करने की उपेक्षा न करें, इन्हें परमेश्वर के प्रति धन्यवाद के कार्यों के रूप में हमारे जीवन और एजेंडा के केंद्र में रखें। इस प्रकार, लेखक जीवन को संभावित रूप से पवित्र बनाता है क्योंकि हम परमेश्वर की गवाही देने और अपने बहनों और भाइयों की सेवा करने के इस कर्तव्य का पालन करते हैं क्योंकि हम उन गतिविधियों में संलग्न हैं।

जब हम उन गतिविधियों में शामिल होते हैं, तो हम ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के केंद्र से बाहर रहते हैं। स्तुति का बलिदान, ईश्वर के नाम को स्वीकार करने वाले होठों का फल, हमें ईश्वर के बारे में बोलने में साहसी होने के लिए प्रोत्साहित करता है, यहाँ तक कि उन जगहों पर भी जहाँ हमारी संस्कृति ने, सूक्ष्म और कम-सूक्ष्म तरीकों से, हमें ईश्वर के उपहारों और हमारे जीवन में ईश्वर के स्थान को स्वीकार करने के बारे में बात करने के विचार से असहज बना दिया है। हालाँकि, अगर हम अपने धर्म को चर्चों या घरों के दरवाज़ों के पीछे छिपा कर रखते हैं, तो हमें वह बनना चाहिए जो इब्रानियों के लेखक ने अपने श्रोताओं से इतनी दृढ़ता से आग्रह किया था कि वे न बनें : सार्वजनिक सुनवाई में यीशु के साथ अपने संबंधों के बारे में बोलने के लिए साहस, भय या इच्छा के बिना ईसाई।

कृतज्ञता की हमारी प्रतिक्रिया हमें आज्ञाकारी सेवा के क्षेत्रों में भी ले जाती है। प्रोटेस्टेंट ईसाई अक्सर इस बात के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं कि अच्छे काम ईसाई जीवन में कैसे फिट होते हैं और हमेशा ऐसी किसी भी चीज़ से सावधान रहते हैं जो कामों की धार्मिकता की झलक दे सकती है। इब्रानियों के लेखक हमें एक अलग और, मुझे लगता है, बेहतर एकीकृत मॉडल देते हैं।

अच्छे काम ईश्वर द्वारा हमें दिए गए सभी उपहारों के लिए उनके प्रति कृतज्ञता की हमारी प्रतिक्रिया का एक आवश्यक हिस्सा हैं। जबकि वे ईश्वर का अनुग्रह अर्जित नहीं करते हैं, जो कि आरंभिक कार्य है, वे ईश्वर के प्रति अनुग्रह का एक आवश्यक प्रतिफल हैं। और यदि पारस्परिकता का यह चक्र कहीं भी टूट जाता है, तो ईश्वर द्वारा गतिमान किए गए ईसाई जीवन के नृत्य की सुंदरता खराब हो जाती है।

जैसे-जैसे हम परमेश्वर के अनुग्रह की विशालता और परमेश्वर द्वारा दिए गए उपहारों तथा भविष्य में दिए जाने वाले उपहारों के बारे में अपनी समझ को गहरा करते हैं, वैसे-वैसे हम अनुग्रह को लौटाने, इस परमेश्वर को सम्मान देने तथा पूर्ण निष्ठा से उसकी सेवा करने की अपनी प्रतिबद्धता को भी गहरा पाते हैं। इस कारण से, लेखक अनुग्रह की प्रशंसा करता है, जो विश्वासी के हृदय को महानतापूर्वक तथा कुशलता से स्थिर करता है, उसे यीशु की विश्वसनीयता में सुरक्षित बनाता है तथा उसे परमेश्वर के घराने का एक विश्वसनीय सदस्य भी बनाता है। इन प्रस्तुतियों के दौरान, हमने एक साथ बहुत सी बातें कवर की हैं, जिसमें से शुरू करके हमने यह सीखा है कि इब्रानियों के लिए उपदेश किस परिवेश से उत्पन्न हुआ तथा फिर आरंभ से अंत तक पाठ के माध्यम से उन तरीकों को समझने का प्रयास किया, जिनसे पहली शताब्दी में एक पादरी ने अपनी मण्डली को मसीह के प्रति अपनी प्रतिबद्धता तथा अपनी ईसाई आशा में दृढ़ तथा स्थिर रखने का प्रयास किया, जबकि ऐसी प्रतिबद्धता के कारण उन्हें अपने असमर्थ पड़ोसियों से निरंतर कठिनाइयाँ तथा हानियाँ झेलनी पड़ीं।

इस अध्ययन से कुछ प्राथमिक निष्कर्ष मुख्य रूप से यीशु पर अपनी नज़रें केंद्रित रखना, अपने दैनिक जीवन की व्यस्तता के बीच में उसे और उसके लिए जो कुछ भी है, उसे नज़रअंदाज़ न करना, दिन-प्रतिदिन हमारे सामने आने वाली चुनौतियों के बीच में उस महानता को नज़रअंदाज़ न करना जो मसीह के पास परमेश्वर के पुत्र होने के कारण है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है, और यीशु ने जो कुछ किया, उसे नज़रअंदाज़ न करना, हमें परमेश्वर से जोड़ने और हमें उस जीवन में लाने के लिए जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है, वह जीवन जो हमेशा के लिए रहता है। इब्रानियों के लेखक चाहते हैं कि हम, जैसा कि उनके मूल श्रोता चाहते थे, इसे हमारे जीवन का प्राथमिक केंद्र बिंदु बनाएँ, दिन-प्रतिदिन हमारे मार्ग को निर्धारित करने के लिए शुरुआती बिंदु ताकि हम भटक न जाएँ। दूसरा महत्वपूर्ण सबक जो इब्रानियों के लेखक हमें सिखाते हैं, वह है कि हमें इस बात की पूरी जानकारी होनी चाहिए कि परमेश्वर ने हमें कैसे अनुग्रहित किया है और परमेश्वर की उदारता की अपेक्षा और योग्यता के अनुसार परमेश्वर को जवाब देने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करना चाहिए।

वह हमारी आँखों के सामने कृतज्ञता को एक मुख्य मूल्य के रूप में रखता है, हमें हर उस चीज़ में सोचने के लिए प्रेरित करता है जो हम करते हैं कि हम कैसे सम्मान ला सकते हैं या वफादारी दिखा सकते हैं या उस ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी सेवा कर सकते हैं जिसने हमारे लिए इतना कुछ किया है या हम जो सोच रहे हैं वह ईश्वर के सम्मान को कैसे कम कर सकता है या हमारे महान संरक्षक के प्रति बेवफ़ाई दिखा सकता है या कुछ अवज्ञा कर सकता है जो उसका अपमान करता है। और कृतज्ञता के कारण, ईश्वर ने हमारे लिए क्या किया है और हमें क्या दिया है, और ईश्वर ने अपने अचूक वादों के साथ हमारे सामने क्या रखा है, इस बारे में हमारी जागरूकता के कारण, लेखक हमेशा हमसे हमेशा ऐसा कार्य करने का आग्रह करता है जो ईश्वर के प्रति हमारी

प्रतिबद्धता, उन स्थितियों में ईश्वर के प्रति हमारी कृतज्ञता को प्रदर्शित करता है। एक और चीज़ जो लेखक हम पर अमिट रूप से अंकित करता है, वह है विश्वास की इस यात्रा में एक-दूसरे का समर्थन करने का महत्व।

शुरू से अंत तक, वह अपने श्रोताओं को याद दिलाता है कि हम में से कोई भी अकेले लक्ष्य तक पहुँचने पर भरोसा नहीं कर सकता है, लेकिन कई बिंदुओं पर, हम इस यात्रा के दौरान पुनः ध्यान केंद्रित करने, सुधार करने, भावनात्मक और यहाँ तक कि भौतिक सहायता के लिए अपनी बहनों और भाइयों पर निर्भर होंगे। और इसलिए वह हमसे आग्रह करता है कि हम यह सुनिश्चित करें कि हमारे अपने जीवन में, हमारे मण्डली जीवन में, हम इस सहायक, परस्पर निवेश करने वाले परिवार बनने के करीब और करीब पहुँच रहे हैं ताकि हममें से कोई भी ईश्वर की कृपा से, हमारे सामने रखी गई सभी चीज़ों से वंचित न रहे।